# सत्रीय कार्य
# एम.एच.डी–19
# हिंदी दलित साहित्य का विकास
## (पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी–19
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–19/ 2024–2025
कुल अंक 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×2 = 20

(क) यदि, तुम्हें पहुँचना है
इस महक तक
अपने कापुरुष से कहो
भय छोड़कर बाहर आये
जैसे छत पर आती है धूप

(ख) समाज का ठेकेदार बनकर
रखा है मुझे दूर आज तक
मन्दिर की दहलीज तक से
शून्य से उत्पन्न
अपात्र ठहराकर।

(ग) हाँ–हाँ मैं नकारता हूँ
ईश्वर के अस्तित्व को
संसार के मूल में उसके कृतित्व को
विकास प्रक्रिया में उसके स्वत्व को
प्रकृति के संचरण नियम में
उसके वर्चस्व को

(घ) हाँ–हाँ मैं पुजारी बनना चाहता हूँ
देव–दर्शन के लिए नहीं
पूजन–अर्चन के लिए कि
देव–मूर्ति के सानिध्य में रहकर
एक मानव कैसे बन जाता है
पाषाण–हृदय अमानव?

(ड़) हम जानते हैं
हमारा सब कूछ
भौड़ा लगता है तुम्हें।
हमारी बगल में खड़ा होने पर
कद घटा है तुम्हारा
और बराबर खड़ा देख
भवें तन जाती हैं।

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2 = 20

(क) चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग–धड़ंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े, बस यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता। इस माहौल में यदि वर्ण–व्यवस्था को आदर्श–व्यवस्था कहने वालों को दो–चार दिन बकौल लेखक 'मेरे जन्म राय बदल जाएगी।''

(ख) उसका कतरा–कतरा जल गया था। आग में मिलकर वह मुझसे परिवार से सारी दुनिया से अलग हो गयी थी। माँ की मृत्यु का अहसास मुझे उस समय कहाँ भला? होता भी कैसे? जमीन पर घिसटने वाला शिशु था तब मैं। पीछे रह गया था, ठूंठ–सा बाप बिना टहनी–पत्तों का ऐसा दरख्त जिसके सीने में कोपले नहीं खिलतीं। यूं मेरे भाई भी थे और बहिन भी, पर प्यार से अधिक कहीं उनमें सहानुभूति थी। बस्ती में कुछ औरतें मुझे 'बिना माँ का बच्चा' कहकर पुकारती दुलारती थी।

(ग) सूअर चर रहा है सूअर कहाँ चरता है? कूड़े के ढेर में, गंदगी में। ये चीजें डोम बस्ती की दुनिया का अंग है। कुत्ता आदमी का वफादार, उनकी उपस्थिति को सहन नहीं करता है, भौंक कर अपनी नापसंदगी जाहिर कर रहा है। आभिजात्य समाज की सभ्य दुनिया में तो आदमी अपनी कॉलोनी, अपनी जगह में पशु अपनी जगह पशुशाला में रहता है, लेकिन डोम समाज की बस्ती में सभ्यता के ये तौर–तरीके आपस में गुडमुड हो गए हैं। आदमी, कुत्ता, सुअर सभी इकट्ठे ही हैं, एक दूसरे के साथ, एक–दूसरे को बर्दास्त करते हुए जी रहे हैं।

3. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में टिप्पणी कीजिए :10×4 = 40

(क) मुक्ति की चेतना के विस्तार को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत कीजिए।
(ख) 'आवाजें' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।
(ग) 'आमने–सामने' कहानी में किस मुद्दे को उठाया गया है।
(घ) 'जूठन' के सरोकारों को स्पष्ट कीजिए।
(ड़) दलित मजदूर स्त्री शोषण की त्रासदी पर प्रकाश डालिए।
(च) 'अंगारा' कहानी में अभिव्यक्त दलित चेतना को स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए : 10×2 = 20

(क) 'वैतरणी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
(ख) 'सुमंगली' कहानी के आधार पर दलित स्त्री के तिहरे शोषण की समीक्षा कीजिए।
(ग) दलित आत्मकथनों में व्यक्त धार्मिक विश्वासों की समीक्षा कीजिए।
(घ) हिन्दी साहित्य में आत्मकथन की परंपरा का विवेचन कीजिए।
(ड़) दलित कहानी के सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमानों पर प्रकाश डालिए।

# एम.एच.डी-19
# हिंदी दलित साहित्य का विकास

**पाठ्यक्रम कोड: एम.एच.डी-19**
**सत्रीय कार्य कोड: एम.एच.डी-19/ 2024-2025**
**कुल अंक:100**

*अस्वीकरण/विशेष नोट: ये सत्रीय कार्य में दिए गए कुछ प्रश्नों के उत्तर/समाधान के नमूने मात्र हैं। ये नमूना उत्तर/समाधान निजी शिक्षक/शिक्षक/लेखकों द्वारा छात्र की सहायता और मार्गदर्शन के लिए तैयार किए जाते हैं ताकि यह पता चल सके कि वह दिए गए प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकता है। हम इन नमूना उत्तरों की 100% सटीकता का दावा नहीं करते हैं क्योंकि ये निजी शिक्षक/शिक्षक के ज्ञान और क्षमता पर आधारित हैं। सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर तैयार करने के संदर्भ के लिए नमूना उत्तरों को मार्गदर्शक/सहायता के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि ये समाधान और उत्तर निजी शिक्षक/शिक्षक द्वारा तैयार किए जाते हैं, इसलिए त्रुटि या गलती की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। किसी भी चूक या त्रुटि के लिए बहुत खेद है, हालांकि इन नमूना उत्तरों / समाधानों को तैयार करते समय हर सावधानी बरती गई है। किसी विशेष उत्तर को तैयार करने से पहले और अप-टू-डेट और सटीक जानकारी, डेटा और समाधान के लिए कृपया अपने स्वयं के शिक्षक/शिक्षक से परामर्श लें। छात्र को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई आधिकारिक अध्ययन सामग्री को पढ़ना और देखना चाहिए।*

**1. निम्नलिखित काबव्यांशों में से <u>किन्हीं दो</u> की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:**

**(क) यदि, तुम्हें पहुँचना है**
**इस महक तक**
**अपने कापुरुष से कहो**
**भय छोड़कर बाहर आये**
**जैसे छत पर आती है धूप**

कविता एक ऐसा माध्यम है, जो शब्दों के माध्यम से गहरे और सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है। "यदि, तुम्हें पहुँचना है इस महक तक" शीर्षक वाली पंक्तियों में एक गहन संदेश छुपा हुआ है, जिसे संदर्भ और व्याख्या के माध्यम से समझा जा सकता है।

**संदर्भ:**

इस कविता का संदर्भ आत्म-ज्ञान, साहस और आत्मविश्वास से संबंधित है। कवि यहाँ पर एक संदेश दे रहा है कि यदि किसी व्यक्ति को वास्तविक आनंद, सफलता या आत्म-संतुष्टि प्राप्त करनी है, तो उसे अपने भीतर के डर और कायरता को दूर करना होगा। यह एक प्रेरणात्मक संदेश है, जो हमें हमारे जीवन में आने वाले डर और अनिश्चितताओं से पार पाने के लिए प्रेरित करता है।

**व्याख्या:**

**"यदि, तुम्हें पहुँचना है इस महक तक"** - यहाँ 'महक' एक रूपक के रूप में इस्तेमाल की गई है, जो जीवन में प्राप्त होने वाले उच्चतम आनंद, सफलता, या किसी उद्देश्य को प्राप्त करने की संतुष्टि को दर्शाती है। यह महक कोई स्थूल वस्तु नहीं है, बल्कि एक अनुभूति है, जिसे महसूस किया जा सकता है।

**"अपने कापुरुष से कहो"** - 'कापुरुष' शब्द का प्रयोग यहाँ उस व्यक्ति के लिए किया गया है जो डरपोक है, जो अपने भय के कारण कुछ करने से कतराता है। यहाँ कवि हमें यह सुझाव दे रहा है कि हमें अपने भीतर छिपे इस डरपोक व्यक्ति को पहचानना होगा।

**"भय छोड़कर बाहर आये"** - कवि यहाँ पर स्पष्ट रूप से कह रहा है कि हमें अपने डर को छोड़ना होगा और साहसिक कदम उठाने होंगे। यह संदेश हमें अपने आत्म-संदेह और डर को दूर करने के लिए प्रेरित करता है।

**"जैसे छत पर आती है धूप"** - यह एक बहुत ही सुंदर और गहन रूपक है। छत पर आने वाली धूप का अर्थ है कि जैसे धूप बिना किसी भय या संकोच के खुली छत पर आ जाती है, वैसे ही हमें भी अपने डर को छोड़कर बाहर आना होगा। धूप एक सकारात्मकता, ऊर्जा और जीवन की प्रतीक है। यह बताता है कि जब हम अपने डर को छोड़ देते हैं, तो हमारे जीवन में भी उसी प्रकार से रोशनी और सकारात्मकता का प्रवेश होता है।

**विस्तार:**

कवि का संदेश बहुत गहरा और विचारणीय है। यह केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक स्तर पर भी लागू होता है। हमारा समाज भी अनेक प्रकार के भय और असुरक्षाओं से जकड़ा हुआ है। व्यक्तिगत जीवन में यह डर हमारी क्षमताओं को सीमित कर देता है और हमें वह नहीं बनने देता, जो हम वास्तव में बन सकते हैं।

इस कविता की पंक्तियों में जो प्रमुख तत्व उभर कर आता है, वह है आत्म-साक्षात्कार। आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना और उसे स्वीकार करना। जब हम अपने भीतर के कापुरुष को पहचान लेते हैं और उसे भयमुक्त करते हैं, तब हम अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

आत्मविश्वास और साहसिकता को बढ़ावा देने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम अपने जीवन के उन पहलुओं को पहचानें, जो हमें भयभीत करते हैं। यह भय कभी-कभी हमारे अतीत के अनुभवों, सामाजिक दबावों, या आंतरिक असुरक्षाओं से उत्पन्न होते हैं। जब हम इनका सामना करने की हिम्मत करते हैं, तब हम अपने जीवन में नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं।

**सारांश:**

"यदि, तुम्हें पहुँचना है इस महक तक" पंक्तियाँ हमें अपने भीतर छिपे डर और असुरक्षा को छोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। यह हमें साहस और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की सीख देती हैं। जैसे धूप छत पर बिना किसी संकोच के आ जाती है, वैसे ही हमें भी अपने जीवन में

सकारात्मकता और ऊर्जा को आमंत्रित करना चाहिए। यह कविता हमें आत्म-साक्षात्कार और आत्म-संतुष्टि के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

**(ख) समाज का ठेकेदार बनकर**
**रखा है मुझे दूर आज तक**
**मन्दिर की दहलीज तक से**
**शून्य से उत्पन्न**
**अपात्र ठहराकर।**

**संदर्भ :** प्रस्तुत कविता का संदर्भ सामाजिक असमानता और भेदभाव की ओर इंगित करता है। इस कविता में कवि समाज में व्याप्त उन विसंगतियों को उजागर करता है, जिनमें एक वर्ग विशेष को मंदिर की दहलीज तक पहुंचने से भी वंचित रखा जाता है। आइए इस कविता के प्रत्येक अंश का विस्तार से विश्लेषण करें:

**व्याख्या:**

**"समाज का ठेकेदार बनकर"**

इस पंक्ति में 'समाज का ठेकेदार' शब्द का प्रयोग किया गया है, जो समाज के उन प्रभावशाली और प्रभुत्वशाली लोगों की ओर इशारा करता है, जो समाज के नियम और मानदंड तय करते हैं। ये लोग समाज के 'ठेकेदार' होते हैं क्योंकि वे यह निर्धारित करते हैं कि किसे क्या करना चाहिए और किसे क्या नहीं करना चाहिए। ये वही लोग हैं जो सामाजिक भेदभाव और अन्याय को कायम रखते हैं और समाज के निचले तबके के लोगों को उनके अधिकारों से वंचित रखते हैं।

**"रखा है मुझे दूर आज तक"**

इस पंक्ति में कवि ने अपनी पीड़ा और असंतोष को व्यक्त किया है। 'मुझे दूर रखा है' से तात्पर्य है कि कवि या उनका समुदाय लंबे समय से समाज के मुख्यधारा से वंचित रहा है। यह दूरी केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्तर पर भी है। यह पंक्ति यह बताती है कि कैसे समाज के ठेकेदारों ने अपने हितों की रक्षा के लिए समाज के कुछ हिस्सों को दूर रखा है।

**"मन्दिर की दहलीज तक से"**

मंदिर एक पवित्र स्थान होता है जहां लोग पूजा-अर्चना करने जाते हैं। इस पंक्ति में 'मन्दिर की दहलीज' का उल्लेख करके कवि यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उनके समुदाय को धार्मिक स्थानों से भी वंचित रखा गया है। यह धार्मिक भेदभाव का एक प्रमुख उदाहरण है, जहां एक वर्ग विशेष को धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने से रोका जाता है। यह भेदभाव केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक असमानता का भी प्रतीक है।

**"शून्य से उत्पन्न"**

इस पंक्ति में 'शून्य' का अर्थ है कुछ भी नहीं। कवि यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उनका समुदाय शून्य से उत्पन्न हुआ है, अर्थात समाज के प्रभावशाली वर्ग के नजरों में उनका कोई महत्व नहीं है। यह शून्यता न केवल आर्थिक दृष्टि से है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी है। यह पंक्ति यह दर्शाती है कि किस प्रकार समाज का एक वर्ग अन्य वर्गों को शून्य के बराबर मानता है और उन्हें किसी भी प्रकार का महत्व नहीं देता।

**"अपात्र ठहराकर"**

इस पंक्ति में 'अपात्र' शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है किसी कार्य या सम्मान के योग्य न होना। समाज के ठेकेदारों ने कवि और उनके समुदाय को 'अपात्र' ठहरा दिया है। यह अपात्रता केवल मंदिर की दहलीज तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह बताना चाहते हैं कि उनके समुदाय को विभिन्न क्षेत्रों में अपात्र माना गया है और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है।

## सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

कविता का यह अंश भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता की समस्याओं की ओर इंगित करता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में जाति व्यवस्था के कारण समाज के निचले तबकों को विभिन्न धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों से वंचित रखा गया है। इस कविता के माध्यम से कवि ने इस सामाजिक अन्याय को उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होंने यह बताने की कोशिश की है कि कैसे समाज के ठेकेदारों ने अपने अधिकारों और सुविधाओं को सुरक्षित रखने के लिए अन्य समुदायों को अपात्र ठहरा दिया है।

## निष्कर्ष

इस प्रकार, कविता का यह अंश सामाजिक असमानता, भेदभाव और अन्याय की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। कवि ने अपनी पीड़ा और असंतोष को व्यक्त करके समाज के ठेकेदारों की कठोरता और अन्यायपूर्ण व्यवहार को उजागर किया है। यह कविता हमें सोचने पर मजबूर करती है कि समाज में समानता और न्याय कैसे स्थापित किया जा सकता है और सभी वर्गों को उनके अधिकार कैसे दिए जा सकते हैं।

**2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:**

**(क) चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग-धड़ंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े, बस यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता। इस माहौल में यदि वर्ण-व्यवस्था को आदर्श-व्यवस्था कहने वालों को दो-चार दिन बकौल लेखक 'मेरे जन्म राय बदल जाएगी।"**

इस प्रसंग की सप्रसंग व्याख्या का उद्देश्य उस सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण करना है जिसमें लेखक का बचपन बीता और उसके प्रभाव का वर्णन करना है। यह प्रसंग उस समय और परिस्थिति को उजागर करता है जिसमें लेखक का पालन-पोषण हुआ था।

इस प्रकार के विवरण से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि समाज की विभिन्न व्यवस्थाएँ और संरचनाएँ व्यक्ति के जीवन और मानसिकता पर कैसे प्रभाव डालती हैं।

1. **सामाजिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि:**

प्रसंग के पहले वाक्य में लेखक ने अपने बचपन की स्थिति का वर्णन करते हुए बताया है कि "चारों तरफ गंदगी भरी होती थी।" यह वाक्य तत्कालीन समाज की वास्तविकता को दर्शाता है जहाँ सफाई और स्वच्छता की कमी थी। इस प्रकार की स्थिति न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है बल्कि मानसिक और भावनात्मक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है।

2. **दुर्गंध और अस्वास्थ्यकर वातावरण:**

लेखक ने यह भी उल्लेख किया है कि "ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए।" यह वाक्य हमें यह संकेत देता है कि उस वातावरण में जीवन कितना कठिन और चुनौतीपूर्ण था। ऐसी स्थिति में जीना न केवल शारीरिक रूप से कठिन होता है बल्कि मानसिक रूप से भी थका देने वाला होता है।

3. **तंग गलियाँ और उसमें घूमते सूअर:**

प्रसंग में "तंग गलियों में घूमते सूअर" का उल्लेख भी किया गया है। यह दर्शाता है कि उस क्षेत्र में सफाई की कितनी कमी थी और सार्वजनिक स्थानों की स्थिति कितनी खराब थी। तंग गलियाँ और उनमें घूमते सूअर एक ऐसे समाज की छवि प्रस्तुत करते हैं जो मूलभूत सुविधाओं से वंचित है।

4. **नग्न-धड़ंग बच्चे और कुत्ते:**

लेखक ने "नंग-धड़ंग बच्चे, कुत्ते" का भी जिक्र किया है। यह हमें इस बात की ओर इशारा करता है कि उस समाज में गरीबी और असमानता कितनी गहरी थी। नंग-धड़ंग बच्चे समाज की आर्थिक स्थिति और उनके जीवन स्तर को स्पष्ट करते हैं। यह स्थिति बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा और समग्र विकास के लिए बहुत हानिकारक होती है।

5. **रोजमर्रा के झगड़े:**

"रोजमर्रा के झगड़े" का उल्लेख सामाजिक तनाव और असंतोष को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि उस समाज में रहने वाले लोग कितने संघर्षशील और तनावग्रस्त थे। रोजमर्रा के झगड़े समाज में अशांति और असुरक्षा की भावना को जन्म देते हैं।

6. **वर्ण-व्यवस्था की आदर्श-व्यवस्था पर सवाल:**

प्रसंग के अंत में लेखक ने वर्ण-व्यवस्था को आदर्श-व्यवस्था कहने वालों की आलोचना की है। वह कहते हैं कि इस माहौल में यदि उन्हें भी कुछ समय बिताना पड़े तो उनकी राय बदल जाएगी। यह बयान हमें यह समझने में मदद करता है कि लेखक वर्ण-व्यवस्था और सामाजिक

असमानता के खिलाफ हैं। यह आलोचना समाज की उन संरचनाओं की ओर इशारा करती है जो लोगों के बीच भेदभाव और असमानता को बढ़ावा देती हैं।

7. **लेखक का व्यक्तिगत अनुभव और उसकी सामाजिक टिप्पणी:**

लेखक का यह व्यक्तिगत अनुभव हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ व्यक्ति की मानसिकता और दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं। यह प्रसंग न केवल लेखक के बचपन की कठिनाइयों को उजागर करता है बल्कि यह भी बताता है कि समाज की मौजूदा व्यवस्थाएँ कैसे नाकाम होती हैं और उनमें बदलाव की आवश्यकता है।

**निष्कर्ष:**

इस प्रकार, इस प्रसंग की सप्रसंग व्याख्या हमें यह समझने में मदद करती है कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ व्यक्ति के जीवन पर कैसे प्रभाव डालती हैं। लेखक ने अपने अनुभवों के माध्यम से समाज की वास्तविकता को उजागर किया है और यह दर्शाया है कि कैसे वर्ण-व्यवस्था और सामाजिक असमानता लोगों के जीवन को प्रभावित करती है। यह प्रसंग हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि समाज में सुधार और बदलाव की आवश्यकता क्यों और कैसे है।

**(ख) उसका कतरा-कतरा जल गया था। आग में मिलकर वह मुझसे परिवार से सारी दुनिया से अलग हो गयी थी। माँ की मृत्यु का अहसास मुझे उस समय कहाँ भला? होता भी कैसे? जमीन पर घिसटने वाला शिशु था तब मैं। पीछे रह गया था, ठूंठ-सा बाप बिना टहनी-पत्तों का ऐसा दरख्त जिसके सीने में कोपले नहीं खिलतीं। यूं मेरे भाई भी थे और बहिन भी, पर प्यार से अधिक कहीं उनमें सहानुभूति थी। बस्ती में कुछ औरतें मुझे 'बिना माँ का बच्चा'' कहकर पुकारती दुलारती थी।**

इस अंश में लेखक अपने बचपन के उन क्षणों का वर्णन कर रहा है जब उसकी माँ का देहांत हो गया था। वह याद कर रहा है कि उसकी माँ की मृत्यु के बाद उसके जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए।

"उसका कतरा-कतरा जल गया था। आग में मिलकर वह मुझसे परिवार से सारी दुनिया से अलग हो गयी थी।" इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि लेखक की माँ का निधन हुआ था और उसकी मृत्यु ने पूरे परिवार को झकझोर दिया था। लेखक की माँ का शरीर जैसे जलकर राख हो गया था, वैसे ही वह लेखक और उसके परिवार से हमेशा के लिए अलग हो गई थी।

"माँ की मृत्यु का अहसास मुझे उस समय कहाँ भला? होता भी कैसे? जमीन पर घिसटने वाला शिशु था तब मैं।" यहाँ लेखक बताता है कि जब उसकी माँ का देहांत हुआ, तब वह बहुत छोटा था, एक शिशु था, जिसे उस समय माँ की मृत्यु का अहसास नहीं हो सकता था।

"पीछे रह गया था, ठूंठ-सा बाप बिना टहनी-पत्तों का ऐसा दरख्त जिसके सीने में कोपले नहीं खिलतीं।" इस वाक्य में लेखक अपने पिता की स्थिति का वर्णन करता है। उसकी माँ के निधन

के बाद उसके पिता एक ठूंठ जैसे हो गए थे, एक ऐसा वृक्ष जिसमें अब नई पत्तियाँ नहीं उग सकतीं। यहाँ पर लेखक अपने पिता की पीड़ा और खालीपन को व्यक्त कर रहा है।

"यूं मेरे भाई भी थे और बहिन भी, पर प्यार से अधिक कहीं उनमें सहानुभूति थी।" लेखक यह कहता है कि उसके भाई-बहन थे, लेकिन उनमें प्यार से अधिक सहानुभूति थी। लेखक यहाँ इस बात को उजागर करता है कि उसके भाई-बहन उसकी स्थिति को समझते थे और उसके प्रति सहानुभूति रखते थे, लेकिन वह मातृत्व प्रेम का स्थान नहीं ले सकते थे।

"बस्ती में कुछ औरतें मुझे 'बिना माँ का बच्चा" कहकर पुकारती दुलारती थी।" यहाँ लेखक बताता है कि उसके आस-पास की बस्ती की औरतें उसे 'बिना माँ का बच्चा' कहकर पुकारती थीं और दुलारती थीं। यह वाक्य लेखक के प्रति बस्ती की औरतों की सहानुभूति और दुलार का प्रतीक है। वे उसे अपनी ममता से भरने की कोशिश करती थीं।

इस पूरे अंश में लेखक अपने बचपन की कठिनाइयों और अपनी माँ की मृत्यु के बाद के हालात का मार्मिक वर्णन करता है। उसकी माँ की मृत्यु ने न केवल उसके जीवन को बल्कि उसके पूरे परिवार को प्रभावित किया। इस वाक्यांश के माध्यम से लेखक ने एक गहरी मानवीय भावना को व्यक्त किया है जो पाठकों को भावुक कर देती है।

**3. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में टिप्पणी कीजिए:**

**(क) मुक्ति की चेतना के विस्तार को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत कीजिए।**

**मुक्ति की चेतना के विस्तार की कहानी**

मुक्ति की चेतना एक ऐसी अवधारणा है जो न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि समाज में बदलाव की बुनियाद भी रखती है। यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है, जो अपने आसपास के परिवेश को देखकर जागरूक होता है और अपने अनुभवों के माध्यम से मुक्ति की चेतना का विस्तार करता है।

**कहानी:**

कहानी का नायक, राजेश, एक छोटे से गाँव का निवासी था। उसकी जिंदगी साधारण थी, लेकिन उसमें एक विशेषता थी—वह हमेशा सवाल पूछता था। गाँव में लोग हमेशा अपने दिनचर्या में व्यस्त रहते थे, लेकिन राजेश को इस व्यस्तता में एक खालीपन महसूस होता था। उसे समझ नहीं आता था कि क्यों लोग अपनी समस्याओं के लिए कभी एकजुट नहीं होते।

एक दिन, राजेश ने गाँव के स्कूल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। उसने बच्चों को बुलाया और उन्हें कुछ प्रेरणादायक कहानियाँ सुनाईं। इन कहानियों में मुक्ति, संघर्ष, और एकता की बातें थीं। बच्चों की आँखों में चमक देखकर राजेश को लगा कि शायद यह समय है, जब वह खुद भी कुछ करे।

राजेश ने गाँव में एक सभा का आयोजन किया और गाँव के लोगों को आमंत्रित किया। सभा में उसने अपनी बातें रखी—"हम सबको मिलकर अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना होगा। मुक्ति की चेतना तब ही आएगी जब हम एकजुट होकर बदलाव की ओर कदम बढ़ाएँगे।"

गाँव के बुजुर्गों ने उसकी बातों का मजाक उड़ाया, लेकिन कुछ युवा उसकी सोच से प्रभावित हुए। धीरे-धीरे, राजेश ने एक छोटी टीम बनाई, जिसमें गाँव के कुछ युवा और महिलाएँ शामिल हुए। उन्होंने मिलकर गाँव के मुद्दों पर चर्चा शुरू की।

गाँव में कई समस्याएँ थीं—शिक्षा का अभाव, स्वच्छता की कमी, और सरकारी योजनाओं का सही इस्तेमाल न होना। राजेश ने इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया और सभी को एकजुट करने की कोशिश की। उन्होंने लोगों को समझाया कि मुक्ति की पहली सीढ़ी जागरूकता है।

राजेश और उसकी टीम ने गाँव में सफाई अभियान चलाया। शुरुआत में कुछ लोग सहमत नहीं हुए, लेकिन जब उन्होंने देखा कि युवा मिलकर काम कर रहे हैं, तो धीरे-धीरे सभी ने भाग लेना शुरू किया। गाँव की स्थिति में सुधार आने लगा।

इस सफलता ने राजेश को और भी उत्साहित किया। उसने गाँव के लोगों से कहा, "हमारी मुक्ति का रास्ता केवल स्वच्छता से नहीं, बल्कि शिक्षा से भी है। हमें अपनी अगली पीढ़ी को शिक्षित करना होगा।"

राजेश ने गाँव में एक छोटा पुस्तकालय स्थापित किया। वहाँ बच्चों और युवाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने गाँव के लोगों से कहा, "शिक्षा हमें सोचने और समझने की क्षमता देती है। यही हमारी असली मुक्ति है।"

समय बीतता गया और राजेश की कोशिशें रंग लाने लगीं। गाँव के लोग अब एकजुट होकर काम करने लगे थे। उन्होंने सामूहिक रूप से विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना शुरू किया। अब गाँव में बच्चों के लिए स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, और स्वच्छता सुविधाएँ थीं।

**संघर्ष और विजय:**

राजेश की मुक्ति की चेतना ने न केवल उसे, बल्कि पूरे गाँव को जागरूक किया। लोगों ने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए एकजुट होना सीखा। राजेश ने देखा कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो उनका संघर्ष मजबूत होता है और परिवर्तन संभव होता है।

गाँव के लोग अब समझ गए थे कि मुक्ति का अर्थ केवल व्यक्तिगत सुख नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से संभव है। उन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना शुरू कर दिया। यह बदलाव गाँव के प्रत्येक व्यक्ति में एक नई चेतना लेकर आया।

**निष्कर्ष:**

राजेश की कहानी से यह स्पष्ट होता है कि मुक्ति की चेतना का विस्तार केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। जब एक व्यक्ति जागरूकता फैलाने का कार्य करता है, तो वह समाज को एक नई दिशा दे सकता है। मुक्ति की इस यात्रा में हर व्यक्ति की

भूमिका महत्वपूर्ण होती है, और एकजुट होकर ही हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

### (ख) 'आवाजें' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

'आवाजें' कहानी, भीष्म साहनी द्वारा लिखित, हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है। यह कहानी समाज की विषमताओं, मानव मनोविज्ञान, और मानवीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है। कहानी की मूल संवेदना मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक असमानताओं, और मनुष्य की आंतरिक संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।

**कहानी का सारांश**

कहानी का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग व्यक्ति है, जो अकेलेपन और अवसाद से जूझ रहा है। उसकी जिंदगी में किसी प्रकार की खुशी या संतोष नहीं है। वह अपने परिवार, दोस्तों, और समाज से अलग-थलग महसूस करता है। उसकी जिंदगी में आवाजों का महत्व बहुत अधिक है। वह उन आवाजों को सुनता है जो वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं, लेकिन उसके मनोविज्ञान का हिस्सा बन गई हैं।

**सामाजिक असमानता**

कहानी समाज में मौजूद असमानताओं और विडंबनाओं को उजागर करती है। मुख्य पात्र की हालत इस बात का प्रतीक है कि समाज में कई लोग ऐसे हैं जो शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ित होते हैं, लेकिन उनकी आवाजें अनसुनी रह जाती हैं। वे समाज के हाशिये पर धकेल दिए जाते हैं, जहां उनकी पीड़ा और संघर्ष किसी को नजर नहीं आते। यह कहानी इस बात पर भी जोर देती है कि समाज में हर व्यक्ति की आवाज महत्वपूर्ण है और उसे सुनने की जरूरत है।

**मानसिक संघर्ष और अवसाद**

कहानी का एक महत्वपूर्ण पहलू मानसिक संघर्ष और अवसाद है। मुख्य पात्र के जीवन में खुशियों की कमी और अकेलेपन ने उसे मानसिक रूप से टूटने की कगार पर ला दिया है। उसकी आवाजें उसके मन की अशांति और व्यथा का प्रतीक हैं। वह आवाजें उसकी आंतरिक पीड़ा और अवसाद को व्यक्त करती हैं। कहानी इस बात को स्पष्ट करती है कि मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति कितनी महत्वपूर्ण हैं और उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

**मानवीय संबंध**

कहानी मानवीय संबंधों की अहमियत को भी उजागर करती है। मुख्य पात्र का अकेलापन और समाज से कटाव इस बात का संकेत है कि मनुष्य को अपने जीवन में रिश्तों की आवश्यकता होती है। परिवार, दोस्त, और समाज के लोग व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। उनके बिना व्यक्ति मानसिक और भावनात्मक रूप से कमजोर हो सकता है।

**संवेदनाओं की गहराई**

‘आवाजें’ कहानी संवेदनाओं की गहराई को छूती है। यह पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है कि वे अपने आसपास के लोगों की आवाजें सुनें और समझें। कहानी इस बात पर जोर देती है कि हर व्यक्ति की जिंदगी में संघर्ष होते हैं, और उन्हें पहचानना और सहानुभूति दिखाना आवश्यक है। यह कहानी मानवता की अपील करती है कि वे एक-दूसरे की भावनाओं को समझें और उन्हें नजरअंदाज न करें।

**निष्कर्ष**

‘आवाजें’ कहानी भीष्म साहनी की लेखनी की एक उत्कृष्ट मिसाल है। यह कहानी हमें समाज में मौजूद असमानताओं, मानसिक संघर्षों, और मानवीय संबंधों की गहरी समझ प्रदान करती है। कहानी की मूल संवेदना मानवीय भावनाओं, समाज की वास्तविकताओं, और मानसिक स्वास्थ्य की अहमियत को रेखांकित करती है। यह कहानी हमें सिखाती है कि हमें एक-दूसरे की आवाजों को सुनना और समझना चाहिए, क्योंकि हर व्यक्ति की आवाज में उसकी जिंदगी की कहानी होती है।

इस प्रकार, ‘आवाजें’ कहानी न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि यह समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों और संवेदनाओं को भी जागृत करती है। यह कहानी हमें मानवीय मूल्यों और सहानुभूति की याद दिलाती है, जो एक स्वस्थ और समृद्ध समाज के निर्माण में सहायक होती है।

**(ग) ‘आमने-सामने’ कहानी में किस मुद्दे को उठाया गया है।**

"आमने-सामने" कहानी में मुख्यतः समाज के विभिन्न स्तरों और उनकी समस्याओं को उजागर किया गया है। इस कहानी में मुख्य मुद्दा वर्ग संघर्ष और सामाजिक असमानता है। लेखक ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच की खाई को दर्शाने के लिए विभिन्न पात्रों और घटनाओं का उपयोग किया है।

**वर्ग संघर्ष का चित्रण:**

कहानी में दो प्रमुख पात्रों के माध्यम से समाज के दो वर्गों का प्रतिनिधित्व किया गया है। एक तरफ निम्न वर्ग के संघर्षशील लोग हैं जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। दूसरी तरफ उच्च वर्ग के लोग हैं जो सुविधाओं और संसाधनों का आनंद लेते हैं।

**सामाजिक असमानता:**

कहानी में सामाजिक असमानता को बड़े ही सूक्ष्मता से पेश किया गया है। निम्न वर्ग के लोग जिन परिस्थितियों में जी रहे हैं, वे अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण हैं। उनकी जिंदगी संघर्षों से भरी हुई है। दूसरी ओर, उच्च वर्ग के लोग इन समस्याओं से अनभिज्ञ होते हैं और अपनी आरामदायक जिंदगी में मस्त रहते हैं।

**मानवीय संवेदनाएं:**

कहानी में मानवीय संवेदनाओं का भी बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। निम्न वर्ग के लोग आपसी सहयोग और एकता के बल पर अपनी समस्याओं का सामना करते हैं। उनके बीच की मानवीय संवेदनाएं और संबंध बड़े गहरे होते हैं। इसके विपरीत, उच्च वर्ग के लोग अपने स्वार्थ में डूबे होते हैं और उन्हें दूसरों की परेशानियों का अंदाजा नहीं होता।

**संघर्ष और हिम्मत:**

कहानी का एक और महत्वपूर्ण पहलू संघर्ष और हिम्मत है। निम्न वर्ग के लोग अपनी परिस्थितियों से हार नहीं मानते और हमेशा बेहतर जीवन के लिए प्रयासरत रहते हैं। उनकी हिम्मत और संघर्ष की भावना प्रेरणादायक है।

**सामाजिक बदलाव की आवश्यकता:**

कहानी का अंत सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करता है। लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि समाज में असमानता और अन्याय को समाप्त करने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

**निष्कर्ष:**

"आमने-सामने" कहानी में सामाजिक असमानता और वर्ग संघर्ष जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया गया है। यह कहानी समाज के विभिन्न वर्गों की वास्तविकता को दर्शाती है और हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। कहानी हमें प्रेरित करती है कि हम समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएं और सभी के लिए एक समान और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करें।

**साहित्यिक विश्लेषण:**

लेखक ने कहानी को प्रभावशाली बनाने के लिए सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने पात्रों और घटनाओं का जीवंत चित्रण किया है, जिससे पाठक कहानी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। कहानी की संरचना और संवाद पाठकों को सोचने पर मजबूर करते हैं और उन्हें समाज की वास्तविकता से रूबरू कराते हैं।

**समाज के प्रति लेखक का दृष्टिकोण:**

लेखक का दृष्टिकोण समाज के प्रति संवेदनशील और जागरूक है। उन्होंने समाज के निम्न वर्ग की समस्याओं को बड़े ही संवेदनशीलता के साथ पेश किया है और समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय को दूर करने की जरूरत पर जोर दिया है।

**पाठक के लिए संदेश:**

कहानी का संदेश स्पष्ट है कि हमें समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए और सभी के लिए समान अवसर और न्याय सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। कहानी पाठक को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराती है और उन्हें सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है।

इस प्रकार, "आमने-सामने" कहानी समाज के विभिन्न मुद्दों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है और पाठक को सोचने और समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है।

### (घ) 'जूठन' के सरोकारों को स्पष्ट कीजिए।

'जूठन' शब्द का मतलब बहुत समर्थ है, जो किसी चीज़ की असलियत या सत्यता को छुपाने या गोपने का काम करता है। यह एक सामाजिक, मानसिक और नैतिक पहलू से गंभीर मुद्दा है जो मानव समाज में विशेष महत्व रखता है। 'जूठन' के सरोकारों को स्पष्ट करने के लिए हमें इसके विभिन्न पहलूओं पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

1. **सामाजिक पहलू:** जूठन का सबसे प्रमुख सामाजिक पहलू है। समाज में जूठन करने वाले व्यक्ति अपने सम्बन्धित समुदाय या समाज के साथ विश्वासघात करते हैं। यह सामाजिक विश्वासघात संवेदनशीलता, संघर्ष और असंतोष का कारण बन सकता है। उच्च नैतिक मानकों और समाजिक न्याय के लिए जूठन एक अपराध हो सकता है और इससे समाज में विभाजन और असंतोष उत्पन्न हो सकता है।
2. **राजनीतिक पहलू:** राजनीतिक दल या नेता अक्सर जूठन का सहारा लेते हैं ताकि वे अपनी राजनीतिक अधिकारी या प्रभाव को बनाए रख सकें। जूठन के माध्यम से वे आम जनता को गुमराह करते हैं और वोट प्राप्ति के लिए उनका इस्तेमाल करते हैं। इस प्रकार, जूठन राजनीतिक प्रक्रिया को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है और लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा कर सकता है।
3. **नैतिक पहलू:** नैतिकता के संदर्भ में, जूठन अत्यंत अनुचित माना जाता है। यह व्यक्ति की नैतिकता और विश्वास को उच्च ग्रहणीयता के साथ प्रभावित करता है। जूठन करने वाले व्यक्ति का दूसरों पर भरोसा और सम्मान खो जाता है, जिससे समाज में उनकी नैतिक प्रतिष्ठा को हानि पहुंचती है।
4. **मानसिक पहलू:** जूठन करने वाले व्यक्ति के लिए यह अपने मन की असंतुष्टि और अस्थिरता का कारण बन सकता है। इससे व्यक्ति के अंदर का विश्वासघात बढ़ सकता है और वह खुद को अकेला और असुरक्षित महसूस कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी जूठन का प्रभाव अत्यधिक हो सकता है।
5. **नैतिक पहलू:** नैतिक दृष्टिकोण से भी, जूठन अपराध माना जाता है। यह व्यक्ति की नैतिकता को उच्च ग्रहणीयता के साथ प्रभावित करता है और समाज में उनकी नैतिक प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाता है।
6. **न्यायिक पहलू:** न्यायिक दृष्टिकोण से भी, जूठन का खिलाफ विचार किया जाता है। कई देशों में जूठन को अपराध माना गया है और इसके लिए कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाती है। न्यायिक प्रक्रिया में जूठन के मामलों को सुलझाने के लिए कठोर कानूनी कदम उठाए जाते हैं।
7. **आर्थिक पहलू:** आर्थिक दृष्टिकोण से भी, जूठन अपराध है जिससे व्यक्ति और समाज को नुकसान होता है। व्यापार में जूठन के कारण विश्वास की कमी हो सकती है और बाजार की अस्थिरता बढ़ सकती है। इससे आर्थिक प्रगति और समृद्धि में भी प्रतिबंध आ सकता है।

**समाप्ति:** जूठन एक गंभीर समस्या है जो समाज, नैतिकता, और न्याय के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। इसे समाज में बढ़ते हुए जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है, ताकि असलीता और सत्यता का प्रमुख स्थान प्राप्त हो सके।

**4. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए:**

**(क) 'वैतरणी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।**

**'वैतरणी' कहानी के उद्देश्य**

'वैतरणी' कहानी, हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और कवि **नागार्जुन** द्वारा लिखी गई है। यह कहानी न केवल मानवीय संवेदनाओं को उजागर करती है, बल्कि सामाजिक और नैतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए भी प्रेरित करती है। इस लेख में हम 'वैतरणी' कहानी के मुख्य उद्देश्यों और उनके सामाजिक संदर्भों पर चर्चा करेंगे।

1. **नैतिकता और मानवता का प्रश्न**

कहानी की मूल धारा में नैतिकता का प्रश्न छिपा है। नागार्जुन ने 'वैतरणी' के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि मानवता और नैतिकता का एक दूसरे से गहरा संबंध है। कहानी के पात्र अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं और नैतिक दायित्वों के बीच संघर्ष करते हैं। यह संघर्ष यह दर्शाता है कि व्यक्ति को हमेशा सही और गलत के बीच एक चयन करना होता है।

2. **सामाजिक सच्चाइयाँ**

'वैतरणी' कहानी में नागार्जुन ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। वह दिखाते हैं कि किस तरह समाज में व्याप्त कुरीतियाँ और अनैतिकताएँ व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं। कहानी के पात्र इन सामाजिक सच्चाइयों का सामना करते हैं और यह बताने का प्रयास करते हैं कि कैसे समाज में बदलाव लाया जा सकता है।

3. **आध्यात्मिकता और अस्तित्व का प्रश्न**

कहानी में आध्यात्मिकता का भी गहरा प्रभाव है। 'वैतरणी' का संदर्भ उस नदी से है जो जीवन के कठिनाईयों और चुनौतियों का प्रतीक है। पात्रों का संघर्ष और उनकी यात्रा यह बताती है कि जीवन में कठिनाइयों का सामना करते समय आध्यात्मिकता हमें संबल देती है। यह कहानी यह सिखाती है कि व्यक्ति को अपनी आत्मा के साथ जोड़कर ही सफलता की ओर बढ़ना चाहिए।

4. **कर्म और फल का सिद्धांत**

'वैतरणी' कहानी में कर्म और फल का सिद्धांत भी महत्वपूर्ण है। पात्रों के कार्यों का परिणाम उनके जीवन में स्पष्ट होता है। कहानी के माध्यम से नागार्जुन यह संदेश देते हैं कि हर कार्य का फल निश्चित होता है, और इसलिए हमें अपने कर्मों के प्रति सजग रहना चाहिए। यह सिद्धांत न केवल धार्मिक है, बल्कि यह समाज में नैतिकता और जिम्मेदारी का भी बोध कराता है।

5. **प्रेरणा और साहस का संदेश**

कहानी का एक अन्य उद्देश्य प्रेरणा और साहस प्रदान करना है। पात्रों का संघर्ष और उनके द्वारा की गई यात्राएँ यह दर्शाती हैं कि कठिनाईयों का सामना करने से ही सफलता मिलती है। नागार्जुन पाठकों को यह प्रेरित करते हैं कि वे अपने जीवन में चुनौतियों का सामना करने से न डरें और आगे बढ़ते रहें।

6. **मानव संबंधों का महत्व**

'वैतरणी' कहानी में मानव संबंधों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। पात्रों के बीच के रिश्ते और उनकी जटिलताएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे व्यक्तिगत और सामाजिक रिश्ते जीवन को प्रभावित करते हैं। यह कहानी पाठकों को यह सिखाती है कि सच्चे संबंधों का निर्माण करना और उन्हें निभाना कितना आवश्यक है।

7. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता**

कहानी में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का संदेश भी निहित है। पात्रों का संघर्ष यह दिखाता है कि आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह संदेश समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को उजागर करता है।

**निष्कर्ष**

कुल मिलाकर, 'वैतरणी' कहानी अपने उद्देश्यों के माध्यम से पाठकों को एक गहरा संदेश देती है। यह कहानी नैतिकता, सामाजिक सच्चाइयों, आध्यात्मिकता, कर्म और फल, प्रेरणा, मानव संबंधों, और स्वतंत्रता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालती है। नागार्जुन ने इस कहानी के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि यह सामाजिक बदलाव और मानवता के लिए एक प्रेरणा भी है। 'वैतरणी' एक ऐसी कहानी है जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा देती है।

**(ख) 'सुमंगली' कहानी के आधार पर दलित स्त्री के तिहरे शोषण की समीक्षा कीजिए।**

दलित साहित्य में दलित स्त्रियों की स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने वाली अनेक कहानियाँ मिलती हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण कहानी है 'सुमंगली', जो दलित स्त्री के तिहरे शोषण को उजागर करती है। यह तिहरा शोषण जाति, लिंग और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में देखा जा सकता है।

**जातीय शोषण**

दलित समाज सदियों से भारतीय समाज की जाति व्यवस्था का शिकार रहा है। 'सुमंगली' कहानी में यह जातीय शोषण प्रमुखता से उभरकर आता है। सुमंगली एक दलित महिला है और उसकी जाति उसे समाज में निचले पायदान पर खड़ा करती है। इस जाति व्यवस्था के कारण उसे समाज में अपमान और तिरस्कार सहना पड़ता है। उसे उच्च जाति के लोगों द्वारा हमेशा नीचा दिखाया जाता है और उनके द्वारा दी गई दयनीय परिस्थितियों में जीने के लिए मजबूर किया जाता है। इस शोषण का न केवल उसकी सामाजिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि उसकी आत्म-सम्मान और आत्म-छवि पर भी गहरा आघात होता है।

## लैंगिक शोषण

सुमंगली न केवल एक दलित है, बल्कि एक महिला भी है। इस कहानी में उसके साथ होने वाला लैंगिक शोषण भी प्रकट होता है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाएँ प्रायः दमन और उत्पीड़न का शिकार होती हैं। सुमंगली के जीवन में पुरुषों द्वारा किए गए अत्याचार उसकी सामाजिक स्थिति को और भी दयनीय बना देते हैं। पुरुषों द्वारा उसे न केवल शारीरिक शोषण का सामना करना पड़ता है, बल्कि मानसिक उत्पीड़न भी सहना पड़ता है। उसे केवल एक वस्तु के रूप में देखा जाता है और उसकी भावनाओं, इच्छाओं और अधिकारों का कोई सम्मान नहीं होता।

## आर्थिक शोषण

दलित समाज आर्थिक दृष्टि से भी पिछड़ा हुआ होता है। 'सुमंगली' कहानी में सुमंगली की आर्थिक स्थिति उसकी समस्याओं को और भी बढ़ा देती है। उसे जीविका के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है और इसके बावजूद उसे उचित मजदूरी नहीं मिलती। उसे निम्न वर्ग के काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, जिसमें उसे न तो सम्मान मिलता है और न ही उचित पारिश्रमिक। आर्थिक तंगी के कारण उसका जीवन कठिनाईयों से भरा हुआ है और उसे अनेक अभावों का सामना करना पड़ता है। इस आर्थिक शोषण के कारण वह समाज में और भी अधिक शोषित और उत्पीड़ित हो जाती है।

## सामाजिक परिप्रेक्ष्य

सुमंगली की कहानी दलित स्त्री की त्रासदी को स्पष्ट करती है। जातीय, लैंगिक और आर्थिक शोषण के कारण उसका जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ है। इन तीनों प्रकार के शोषण ने मिलकर उसकी स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया है। समाज में उसके लिए कोई सहारा नहीं है और वह अपनी लड़ाई अकेले लड़ने के लिए मजबूर है। उसकी कहानी न केवल दलित स्त्रियों की व्यथा को उजागर करती है, बल्कि समाज को यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि इन समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है।

## निष्कर्ष

'सुमंगली' कहानी दलित स्त्री के तिहरे शोषण की एक मर्मस्पर्शी कथा है। यह कहानी समाज की उन कुरीतियों और अत्याचारों को उजागर करती है, जिनका सामना दलित स्त्रियाँ अपने दैनिक जीवन में करती हैं। जातीय, लैंगिक और आर्थिक शोषण के त्रिकोण में फंसी सुमंगली की कहानी हमें यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि समाज में समानता और न्याय कैसे लाया जा सकता है। यह कहानी न केवल दलित स्त्रियों की समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि हमें इन समस्याओं का समाधान मिलकर कैसे करना चाहिए। सुमंगली की कहानी एक जागरूकता का संदेश है, जो हमें यह सिखाती है कि शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना कितना महत्वपूर्ण है।